BSKE141

स्नातक कला उपाधि कार्यक्रम

बी.ए. कार्यक्रम

बी.ए.जी (संस्कृत)

सत्रीय कार्य (पंचम छमाही)

(Fifth Semester)

जुलाई 2023 एवं जनवरी 2024 सत्रों के लिए

BSKE141 आयुर्वेद के मूल आधार

अनुशासन विशिष्ट पाठ्यक्रम (DSE)

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

स्नातक कला उपाधि कार्यक्रम

बी.ए. कार्यक्रम

बी.ए.जी (संस्कृत)

अनुशासन विशिष्ट पाठ्यक्रम (DSE)

सत्रीय कार्य **BSKE141** आयुर्वेद के मूल आधार

पाठ्यक्रम कोड- **BSKE141**

पाठ्यक्रम शीर्षक- आयुर्वेद के मूल आधार

सत्रीय कार्य **BSKE141/TMA/2023-2024**

सत्रीय कार्य (जुलाई 2023 एवं जनवरी 2024 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड- **BSKE141 /TMA/2023-2024**

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (**TMA**) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है ।

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठयक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनाँक : .....

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जुलाई 2023 सत्र के लिए : अक्टूबर 2023

जनवरी 2024 सत्र के लिए : अप्रैल 2024

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

(क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

(ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

(ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य **BSKE141** आयुर्वेद के मूल आधार
अनुशासन विशिष्ट पाठ्यक्रम **(DSE)**

पाठ्यक्रम कोड- BSKE141
पाठ्यक्रम शीर्षक- आयुर्वेद के मूल आधार
सत्रीय कार्य BSKE141/TMA/2023-2024

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : –

प्रश्न 1 अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

(6× 15 = 90)

क.आयुर्वेद के अनुसार वात, पित्त और कफ की प्रकृति को विस्तार पूर्वक लिखिए ।

ख. आयुर्वेद का तात्पर्य आवश्यकता और महत्व पर प्रकाश डालिए।

ग. शिशिर ऋतु में आहार विहार पर प्रकाश डालिए।

घ. चरकसंहिता और सुश्रुत संहिता के प्रतिपाद्य पर लेख लिखिए।

ड. उपनिषद् का अभिप्राय और प्रमुख उपनिषदों का वर्णन कीजिए ।

च. आयुर्वेद के उदभव् और विकास पर लेख लिखिए।

प्रश्न 2 अधोलिखित की व्याख्या कीजिए – (10)

आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्। आनन्दाद्धयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। आनन्देन जातानि जीवन्ति। आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति। सैषा भार्गवी वारूणी विद्या परमे व्योमन् प्रतिष्ठिता। स य एवं वेद प्रतितिष्ठति। अन्नवानन्नादो भवति। महान् भवति प्रजया पषुभिर्ब्रह्मवर्चसेन। महान् कीर्त्या।

अथवा

प्राणा ब्रह्येति व्यजानात्। प्राणाद्धयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। प्राणेन जातानि जीवन्ति। प्राणं प्रयन्तयभिसंविशन्तीति। तद्विज्ञाय पुनरेव. वरूणं पितरमुपससार। अधीहि भगवो ब्रह्मेति। तं होवाच। तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा।।